

नुक्कड़ नाटक
विरासत भी, विकास भी - स्वच्छता की नई कहानी

दृश्य 1

(ज़ोर-ज़ोर से ढोलक बजती है। कोरस के लोग चारों तरफ से दौड़ते हुए आते हैं और दर्शकों के बीच एक घेरा (circle) बनाते हैं। सब ताली बजाते हैं और एक साथ गाना गाते हैं।)

गाना :-

कबिरा मन निर्मल भयो , जैसे गंगा नीर।
(ढोलक की थाप धीमी होती है। सूत्रधार बीच में आता है।)

सूत्रधार1 :- प्रणाम भाइयों, बहनों और हमारे प्यारे बच्चों! आज हम आपके सामने एक ऐसी कहानी लेकर आए हैं, जो सिर्फ एक कहानी नहीं, हमारे देश की आज की हकीकत है। एक तरफ हमारा गौरवशाली इतिहास, हमारी विरासत (Heritage)... और दूसरी तरफ हमारा बढ़ता हुआ कदम, यानी विकास (Development)। लेकिन क्या ये दोनों स्वच्छता के बिना मुमकिन हैं?

सूत्रधार2:- हम यहाँ कोई उपदेश देने नहीं आए हैं हम तो बस एक आईना लाए हैं। इस आईने में एक तरफ हमारे पुरखों की छांव है, तो दूसरी तरफ पाश्चात्य सभ्यता की बढ़ती हुई धूप । आइए देखते हैं हमारी अपनी कहानी!

(सूत्रधार पीछे हटता है। रमेश मंच पर आता है, हाथ में प्लास्टिक की चाय की कुल्हड़/कप है। वह चाय पीकर कप सड़क पर फेंक देता है।)

कमला:- (कमला चाची आती है और रमेश को देखती है) अरे! अरी ओ जी! अभी सुबह-सुबह म्युनिसिपैलिटी वाले झाड़ू लगा के गए हैं, और तुमने फिर ये प्लास्टिक का कप वहीं फेंक दिया ? शर्म नहीं आती?

रमेश:- (लापरवाही से) अरे जा जा, अपना काम कर! एक छोटे से कप से क्या पूरा देश गंदा हो जाएगा ? सरकार का काम है सफाई करना, वो करेगी।

राजू:- (किताबें हाथ में लिए एंट्री करता है) चाचा! यही तो हमारी सबसे बड़ी भूल है, नासमझी है, सफाई की शुरुआत तो खुद के घर और खुद की आदत से होती है। स्वच्छता सरकार और जनभागीदारी से ही प्राप्त होगी , आप जानते हैं, ये प्लास्टिक सैकड़ों सालों तक गलता नहीं है?

दादी जी:- (लाठी टेकते हुए आती हैं) अरे राजू बेटा, सही कह रहा है। हमारे ज़माने में जब हम तीरथ जाते थे या किसी ऐतिहासिक धरोहर को देखने जाते थे, तो हम प्रकृति को नदियों को पूजते थे, पर आज कल हम प्रकृति का गुणगान एक हद तक तो करते हैं पर जहाँ - तहाँ कूड़ा कचरा भी फैलाते हैं ! क्या यही हमारी संस्कृति है ?

(लोग भारत माता की जय करते हुए आते हैं और दो गुटों में बँट जाते हैं और भारत माता बोलती हैं)

भारत माता :- जैसे हर घर में हर संतान अलग - अलग प्रवृत्ति की होती है वैसा ही हाल कुछ मेरी भी सन्तानों का है। कुछ तो मेरे प्रति अपना पूर्ण कर्तव्य निभाते हुए मेरा पूर्ण खयाल रखते हैं परन्तु कुछ अपने कर्तव्य पथ से भटके हुए हैं।

राजू:- माता ने सही कहा , सच में कुछ लोग अपनी जिम्मेदारी से बचते हैं।

सूत्रधार2:- यही तो बीमारी है। जिस देश पर हम अपना पूरा अधिकार जताते हैं, उसके प्रति अपने नागरिक कर्तव्यों को निभाने से क्यों भागते हैं ? गीता का कर्म-दर्शन कहता है— फल की चिंता से पहले अपने कर्म की शुचिता देखो। देश संसद के मार्ग दर्शन के साथ - साथ अनुरूप जन

भागीदारी से बनता है और देश बनता है एक बचाई हुई पानी की बूंद से, एक लगाए हुए पेड़ से, और ईमानदारी से साफ की गई एक – एक गली से।

(कमला हाथ में झाड़ू लेकर आती है। बाकी कलाकार झेंपकर पीछे हटते हैं।)

कमला:- स्वच्छता एक संस्कार है। हम नदी में प्लास्टिक डालते हैं और उसके मरने पर रोते हैं । दीवारों को गंदा करते हैं और स्वच्छ भारत का सपना देखते हैं , आओ हम सब मिलकर अपनी ज़िम्मेदारी को समझें और संभालें। (वह झाड़ू रमेश को सौंप देती है) लो, ज़िम्मेदारी संभालो।

दृश्य 2

दादा जी :- (नदी की ओर इशारा करते हुए) यह नदी , यह हमारी सभ्यताओं की जननी थी। इसके किनारे बैठकर पुरखों ने दर्शन लिखे थे।

जगदीश :- दर्शन तो ठीक है दादा जी पर इस नदी पर जब तक हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट नहीं बनेगा, जब तक फैक्ट्रियों का कचरा बहाने का रास्ता नहीं मिलेगा, तब तक शहर में 24 घंटे बिजली कैसे आएगी ? हमारी नदी पवित्र है, लेकिन मेरी मशीन को करंट भी चाहिए!

पिंकी :- भैया ! बिजली तो आ गई, पर दीये की लौ कहीं यादों में खो रही है , नलों से घरों में पानी तो आया मगर कुएं का पनघट जैसे सूना हो गया ।

रोहन :- नौकरी तो मिल गई शहर में, पर गाँव का घर यादों में धुंधला पड़ गया ।

अरुण :- हम तरक्की की सीढ़ी तो चढ़ रहे हैं, पर कहीं ना कहीं हम अपनी धरोहर को भूल रहे हैं।

जगदीश :- यह विकास का पहिया है! इसे रुकना नहीं चाहिए। जीडीपी (GDP) बढ़ रही है, ऊंची इमारतें आसमान छू रही हैं। भारत बदल रहा है!

किरण :- (शांत आवाज में) भारत बदल रहा है, और बदलना ज़रूरी भी है ,
ऊंचाइयों का जश्न मनाओ, लेकिन यह मत भूलो कि जब नींव हिलती
है, तो सबसे आलीशान महल भी ताश के पत्तों की तरह ढह जाता है।
हमारी विरासत ही हमारी धरोहर है , आधुनिकीकरण , शहरीकरण
विकास की ऊंचाई पर पहुँचने के लिए बहुत ज़रूरी हैं लेकिन साथ ही
साथ हमारे वन , उपवन हमारे गाँव इसकी नींव हैं जिन्हें हमें और
मज़बूत बनाना है।

दादी जी:- (जगदीश के सिर पर हाथ फेरते हुए) समझो जगदीश , स्वच्छता
हमारी विरासत का हिस्सा है। हमारे वेदों और पुराणों में लिखा है—
'नदियों को मां मानो, पेड़ों को पूजो'। लेकिन आज हमने गंगा-यमुना
को गंदा कर दिया । पुरानी किलों और मीनारों के पास कचरे के पहाड़
खड़े कर दिए। सोचो विदेशी सैलानियों को हम क्या जवाब देंगे !

किरण:- दादी जी ने बिल्कुल सही कहा। पर्यटन हमारी विरासत से जुड़ा है।
अगर हमारी ऐतिहासिक जगहें साफ-सुथरी होंगी, तो दुनिया भर से
लोग आएंगे। इससे स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा, होटल चलेंगे,
गाड़ियां चलेंगी, और यही तो स्वच्छता से विकास की ओर बढ़ने का
रास्ता है। और वैसे भी इसका असर हमारे स्वास्थ्य और सोच पर भी
तो पड़ता है , जब स्वच्छता नहीं तो स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन
कहाँ से लाएंगे। शरीर अच्छा होगा तो हम भरपूर कार्य कर पाएंगे और
तब विकास हमारी मुट्ठी में होगा।

सूत्रधार:- नए भारत से हम विकसित भारत तब बनेंगे, जब हर नागरिक अपनी
जिम्मेदारी समझेगा। हमें अपनी विरासत को बचाना है, और स्वच्छता
के रास्ते विकास को लाना है।

कोरस: (घूमते हुए गाता है)

दृश्य -3

(सुमन कुछ लोगों के साथ योग कर रहा है तभी वहां विक्की पहुंचता है)

विक्की :- सुमन ये क्या रोज़ तुम पार्क में खड़े होकर सबके साथ हवा अंदर बाहर करते रहते हो ?

सुमन :- विक्की जिसे तुम अपनी नासमझी से हवा का अंदर बाहर करना कहते हो असल में ये योग कहलाता है और इसी योग से मनुष्य अपने भीतर की शांति को तलाशता है।

चाचा जी :- बेटा योग से मनुष्य स्वयं पर नियंत्रण रखना सीखता है , संतुलन बनाता है , शरीर का संतुलन , मन का संतुलन , इच्छा और आवश्यकता का संतुलन

विक्की :- संतुलन ?

चाचा जी :- हाँ , संस्कृति , संस्कार , विरासत और आधुनिकता का संतुलन ।
आधुनिकता को अपनाना है मगर संतुलन बना कर , यही तो हमारी संस्कृति, धरोहर , संस्कार का एक बहुत बड़ा स्तम्भ है।

विक्की :- मैं समझा नहीं ?

सुमन :- देखो जो भी आधुनिकता को , विकास को संतुलित नहीं कर पाया वो विनाश की तरफ बढ़ गया। कितने ही कहने को विकसित देश हो गए लेकिन उन्होंने दिया क्या हथियार , युद्ध , विनाश , तो फिर ऐसे विनाशकारी विकास का क्या फायदा ?

चाचा जी :- विक्की भारत एक ऐसा देश है जो पुरे विश्व को अपना कुटुंब समझता है , ये भारत की संस्कृति है जो वसुधैव कुटुंबकम कहती है। और हमारी संस्कृति से ही हमें संस्कार मिले हैं , यही वजह है की आज पूरा विश्व हमें सम्मान देता है।

सुमन :- इतना ही नहीं हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ऐसे प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने हमारी संस्कृति को पूरे विश्व तक पहुँचाया, 17 अप्रैल 2025

को उन्होंने यूनाइटेड नेशन के यूनेस्को में मेमोरी ऑफ़ द वर्ड रजिस्टर में नाट्यशास्त्र को , योग को, श्रीमद् भागवत गीता को दर्ज कराया , क्योंकि यही हमारी संस्कृति है , धरोहर है और इसी से हमारी पहचान है।

विक्की :- यार ये कैसी बात कर रहा है , इसका मतलब हम अब काम धन्धा छोड़ कर नाटक नौटंकी करे , उससे विकास हो जाएगा ?

चाचा जी :- बेटा यह हमारा नाट्यशास्त्र है, यह सिर्फ मनोरंजन नहीं, मन को शुद्ध करने का माध्यम है। हमारे संस्कार और हमारी संस्कृति हमें सिखाती है कि जब तक मन का मैल साफ नहीं होता, तब तक हाथों की सफाई केवल एक दिखावा है। नाट्य शास्त्र ही एक ऐसी कला है जिसमें सम्पूर्ण विविध कलाओं का समावेश है , नाटक से मनुष्य की मानसिक चिकित्सा होती है , यानी की जब मस्तिष्क स्वस्थ होगा , स्वच्छ होगा तभी विकसित होगा भारत, और विकसित मस्तिष्क से ही तो विकसित भारत बनेगा , इसीलिए तो अब IIT , इंजीनियरिंग कॉलेज , मेडिकल कॉलेज सभी में नाट्य विद्या को महत्व दिया जाने लगा है।

विक्की :- यानि हम सिर्फ कला और संस्कृति को ही बढ़ावा दें , तो फिर कैसे होगा सम्पूर्ण विकास ?

सुमन :- कला और संस्कृति के साथ - साथ निष्काम कर्म को भी जोड़ना होगा, गीता का ज्ञान याद है -- अर्जुन भी जब मोह के द्वन्द से घिर गए थे , तब श्री कृष्ण ने उन्हें निष्काम कर्म का मार्ग दिखाया था।

कोरस १:- (गंभीर वाणी में) "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन..."

सुमन :- फल की चिंता किए बिना, कर्तव्य समझकर कर्म करना , यही निष्काम कर्म ही आज की सबसे बड़ी ज़रूरत है।

विक्की :- निष्काम कर्म... यानी बिना किसी स्वार्थ के अपनी धरती की सेवा। मन की स्वच्छता... जो मेरे कर्म को पवित्र करेगी। मैं समझ गया। केवल कंक्रीट का ढांचा खड़ा करना विकास नहीं है। जब तक उस ढांचे के भीतर रहने वाले इंसान का मन सुसंस्कृत और स्वच्छ नहीं होगा, वह विकास खोखला है।

चाचा जी :- सही समझे यानि की हमें स्वच्छता चाहिए , केवल तन की नहीं बल्कि मन की भी , और मन स्वस्थ होने के लिए चाहिए संस्कृति से मिले हुए संस्कार। और इन तमाम चीजों को लेते हुए निष्काम कर्म करते हुए आगे बढ़ाना है तभी विकसित भारत बनेगा , जहाँ हमारा मूल मंत्र होगा " विकास भी , विरासत भी " और यही तो है हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी का सपना जिसे अब हम सबको एक साथ मिल कर पूर्ण करना है।

सूत्रधार:- तो भाइयों और बहनों! आज इस नुक्कड़ नाटक के माध्यम से हम बस यही संदेश देना चाहते हैं कि—

कलाकार १:- हमें आधुनिक विज्ञान और कचरा प्रबंधन की तकनीक तो चाहिए।

कलाकार २ :- लेकिन हमें प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और मन का योग भी चाहिए।

कलाकार ३ :- जब बाहरी तकनीक और आंतरिक संस्कार मिलेंगे, तभी सच्चा विकास जन्म लेता है ।

कलाकार ६ :- "यह यात्रा स्वार्थ की नहीं, निष्काम कर्म की है और यह प्रयास किसी पुरस्कार का नहीं, हमारे संस्कार का है।"

कोरस (एक सुर में, उद्घोष की तरह गंभीर आवाज़ में):-

"योग से मन को माँजेंगे, कर्म से जग को चमकाएंगे,
विरासत को शीश नवाकर, हम विकास की नई गाथा लिखेंगे!"

सूत्रधार 1:- "बहस अतीत और भविष्य की नहीं, आज के संकल्प की है। जब तक मन में लालच का कचरा रहेगा, बाहर की सड़कें कभी साफ नहीं होंगी। और जब तक कर्म में निष्कामता नहीं होगी, सम्पूर्ण विकास केवल एक नारा रहेगा।

सूत्रधार2 :- आइए, नाट्य के इस मंच से अपने भीतर के कुरुक्षेत्र को जीतें, मन को स्वच्छ करें, कर्म को शुद्ध करें, और अपनी विरासत के साथ, विकास के नए क्षितिज को छुएं।" और यहीं पर कबीर जी की कही एक बात याद आती है जिसका अर्थ है की " जहाँ निर्मल मन होता है वहीं साथ - साथ हरी होते हैं।

गाना :-

कबिरा मन निर्मल भयो , जैसे गंगा नीर।

—पूर्ण पटाक्षेप—